Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 3 | MARCH 2024

आधुनिक भारत के पुनर्निर्माण में स्वामी विवेकानंद के सफल प्रयास : एक ऐतिहासिक अध्ययन

शेषा राम [1]

[1] **सहायक आचार्य (इतिहास), राजकीय महाविद्यालय अन्टाली, भीलवाड़ा, (महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय), राजस्थान।**

ABSTRACT:

"मैं उन सभी धर्मों को स्वीकार करता हूं जो पहले से चले आ रहे हैं और उन सब की पूजा करता हूं। इन धर्मों में जिस तरह भी भगवान की पूजा होती है, मैं भी उस रूप मे उसे पूजूंगां। मैं मुसलमानों की मस्जिद में जाऊंगा, ईसाईयों के गिरजे में जाकर सलीब के सामने सिर झुकाऊंगा, बुद्ध विहार में भगवान बुद्ध और उनके धर्मचक्र की शरण लूंगा। मैं वन में जाकर उस हिन्दू साधु के साथ बैठकर साधना करूंगा जो उस ज्योति को देखने का प्रयत्न कर रहा है जिससे सब हृदय आलोकित है। मैं केवल यहीं सब नहीं करूंगा बल्कि भविष्य में जो कुछ आने वाला है उसके स्वागत के लिए अपने मन के द्वार खुले रखूगां। बाईबल, वेद, कुरान और अन्य सभी धर्मग्रन्थों में बहुत सारे पृष्ठ हैं, और अभी कई और पृष्ठ भी खुलने वाले हैं। मैं अपना हृदय इन सब के लिए खुला रखूगां"।

परिवर्तन सृष्टि का नियम है जब भी कभी यह सृष्टि विपदाओं से, समस्याओं से, संकटों से ग्रस्त होती है तो किसी न किसी महामानव का अवतरण इस धरती पर होता है जो अपने प्रभावी कर्म से संपूर्ण मानव सभ्यता की मनोदशाओं को बदलने की शक्ति धारण करता है और अपने उच्च गुणों की समष्टि से युग की धारा को बदल देता है। ऐसी अपरिमेय शक्ति के प्रतीक थे स्वामी विवेकानंद, जिन्होंने अपनी कर्मठता से पूरे युग को ही परिवर्तित कर दिया था और एक ऐसे सांस्कृतिक दृश्य को स्थापित किया जो हमेशा के लिए इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णिम अंकों से अंकित हो गया।

स्वामी विवेकानन्द का प्रादुर्भाव बंगाल में ऐसे समय में हुआ था जब भारत में औपनिवेशिक राज के विरुद्ध परम्परागत तरीकों के साथ की गई एक विफल क्रान्ति (1857 का विद्रोह) के बाद साम्राज्यवाद-विरोधी विचार नए रूपों में जन्म ले रहे थे। सम्भवतः यह भारतीय इतिहास का वह समय था जब देश में सांस्कृतिक पुर्नजागरण हो रहा था। इस दौरान देश में विभिन्न सामाजिक सुधारवादी संस्थाओं का उदय हुआ जैसे ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, सत्यशोधक समाज, आर्य समाज आदि। इन संस्थाओं ने भारतीय समाज, धर्म और संस्कृति में नवजीवन का संचार करने हेतु कई आन्दोलन चलाए जिनके चलते भारतीयों में पुनर्जागरण एवं जुझारूपन बढ़ा। जिनसे प्रभावित होकर स्वामी विवेकानंद ने पुनर्जागरण की एक ऐसी लौ जगाई जिससे दिन प्रति दिन समाज में परिवर्तन होता चला गया और उनके प्रयासों का सकारात्मक रूप समाज के मध्य दिखाई देने लगा। ये भारत के जीवन का एक ऐतिहासिक मोड़ था।

स्वामी विवेकानन्द ने अपने सफल प्रयास से संपूर्ण मानव सभ्यता पर एक ऐसी अमिट छाप छोड़ी जिसके माध्यम से संपूर्ण संस्कृति और सभ्यता सद्भाव की ओर अग्रसर हो चली और आध्यात्मिकता के रंग में रंग गई। वे नये भारत की नव चेतना के प्रतीक थे। उन्होनें सांस्कृतिक भारत का ऐतिहासिक नवसृजन किया, भूले हुए आध्यात्मवाद को पुर्नजीवित किया और सामाजिक सुधार का मार्ग प्रशस्त किया। इस प्रकार आधुनिक भारत के लिए वे प्रेरणा, विश्वास और राष्ट्रीय गर्व के स्त्रोत बने। जिन्होंने अपने अदम्य प्रयासों से आधुनिक भारत को उसकी नवीनता के साथ आकार, प्रकार और उद्देश्य प्रदान किया।

KEYWORDS:

आधुनिक भारत, पुनर्निर्माण, स्वामी विवेकानंद, प्रयास, ऐतिहासिक, अध्ययन।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
28th March 2024	30th March 2024

प्रस्तावना:-

सृष्टि निरंतर गतिशील, परिवर्तनशील एवं नित्य नवीनता को धारण करने वाली ईश्वर की अद्वितीय रचना है जो पग पर अपने अंतर के कष्टों को भुलाते हुए, अपनी समस्याओं का समाधान करते हुए, संकटों से लड़ते हुए रमणीयता की ओर अग्रसर होती है और इस रमणीयता के अंतस में ही नवीनता बसी हुई है। क्योंकि जहाँ नवीनता है वही सौंदर्य विद्यमान हैं।

यदि भारत वर्ष के ऐतिहासिक परिदृश्य पर दृष्टिपात किया जाए तो हर पृष्ठ कितना ही संघर्ष के बादलों से आवृत्त क्यों न रहा हो लेकिन किसी न किसी ज्योति प्रकाश के द्वारा उसने नवीनता को धारण किया है। इसी प्रकार भारतवर्ष को आधुनिकता की ओर ले जाने वाले, नवीनता के सौंदर्य से आरोपित करने वाले महामानव के रूप में स्वामी विवेकानंद का अवतरण इस पृथ्वी पर हुआ और उन्होंने पग-पग पर ऐसे प्रयास किये जिनके द्वारा भारत आधुनिकता की ओर प्रवेश करता चला गया। या यूं कहें कि स्वामी विवेकानंद के प्रयास आधुनिक भारत की पुनः जागृति के लिए सफल सिद्ध हुए हैं तो इसमें अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वामी विवेकानन्द का प्रादुर्भाव उस समय हुआ जब भारत में औपनिवेशक पराधीनता व्याप्त थी। साथ ही यह देश सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि से भी पतनोन्मुख हालात से जूझ रहा था। समूचा भारतीय समाज, विशेषकर हिन्दू समाज, पूरी तरह धार्मिक रूढ़ीवाद एवं तरह-तरह के अन्धविश्वासों के जाल में जकड़ा हुआ था। तत्कालीन हिन्दू धर्म के सम्बन्ध में महान पाश्चात्य सामाजिक चिन्तक मैक्स वेबर ने लिखा है, "हिन्दू धर्म दरअसल जादू-टोना, अन्धविश्वास और अध्यात्मवाद की खिचड़ी बनकर रह गया था"। इन्हीं स्थितियों के मद्देनजर 19वीं शताब्दी में सामने आए महान धर्म सुधारक स्वामी विवेकानन्द ने हिन्दू धर्म एवं समाज में उत्पन्न हो चुकी तमाम विकृतियों एवं कुरीतियों का खण्डन किया तथा हिन्दू धर्म को पुनजीर्वित करने के गम्भीर प्रयास किए। उनका मानना था कि हिन्दू धर्म एवं संस्कृति के पुनर्जीवन का भारत के 'राष्ट्रीय पुनर्जीवन' से गहरा सम्बन्ध है क्योंकि भारत के ऐतिहासिक उदय हेतु हिन्दू धर्म एवं संस्कृति ही एक बड़ी आधारशिला का काम कर सकती है जो उसे आधुनिकता से जोड़ने में सक्षम हो। अपनी इसी समझ के आधार पर विवेकानन्द ने भारत में भूले हुए अध्यात्मवाद को पुर्नजीवित किया, सामाजिक-धार्मिक सुधार का मार्ग प्रशस्त किया तथा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का नवसृजन किया।

आधुनिक भारत के पुनर्निर्माण में स्वामी विवेकानंद के सफल प्रयास

स्वामी विवेकानंद राष्ट्रप्रेम की उन भावनाओं से ओतप्रोत थे जिन भावनाओं ने हर पल, हर क्षण उन्हें अपने भारत को आधुनिकता और पुनर्जागृती की ओर ले जाने के लिए प्रेरित किया है। उनके प्रयासों पर दृष्टिपात करें तो सर्वप्रथम सन् 1888 में विवेकानन्द संन्यासी वेष में

उत्तर भारत के प्रमुख शहरों जैसे वाराणसी, हरिद्वार, अयोध्या, वृंदावन एवं आगरा गये । हिमालय क्षेत्र में कुछ समय बिताने के बाद वे बिहार के प्रमुख नगरों (यथा पटना, गया आदि), राजस्थान के जयपुर व अलवर तथा गुजरात के अहमदाबाद, भुज, सोमनाथ, पोरबन्दर, द्वारिका, काठियावाड़ एवं बम्बई व पूना होते हुए केरल पहुंचे । यहाँ कोचीन, त्रिवेन्द्रम व मदुरै होते हुए अन्त में वे कन्याकुमारी पहुँचें । निरंतर भ्रमण की इस प्रवृत्ति ने उन्हें देश के विभिन्न प्रांतों के रीति-रिवाजों एवं आचार-विचारों से जोड़करकर और अधिक मजबूत कर दिया। वह जितनी पास से अपने भारतवर्ष को देखते रहे तो न केवल भारत के सौंदर्य संस्कृति रीतिरिवाज और परंपराओं से जुड़ें वरन् चारों ओर व्याप्त विभिन्न प्रकार की विसंगतियो को भी उन्होंने बड़ी सूक्ष्म दृष्टि के साथ देखा, परखा और अनुभव किया । इसी वेदना की अनुभूति ने उनके प्रयासों को और तीव्र करने की शक्ति प्रदान की। अब उनका कार्य मात्र भ्रमण करना नहीं वरन् अपनी भारतभूमि के एक एक व्यक्ति का कष्ट मिटाना था । भारतीय जनता की घोर निर्धनता, अशिक्षा तथा कुरीतियों आदि का निराकरण करने हेतु वह प्रयासों में रत हो गये । उन्होंने यह भी देखा कि पूरा भारत दुर्भिक्ष, महामारी, रोग और दरिद्रता से बेहाल है । अंग्रेज एवं धनिक लोग गरीबों का शोषण कर रहे हैं । भूखे-प्यासे लोग अन्न के दाने-दाने के लिए तरस रहे हैं। पुरोहित वर्ग लोगों को धर्म के नाम पर भयभीत कर अपना स्वार्थ साध रहे हैं । धर्म के बारे में सही ज्ञान न मिलने के कारण भारतीयों के हृदय में न आशा बची है, न विश्वास और न ही नैतिक बल। ऐसे में विवेकानन्द ने कन्याकुमारी के श्रीमन्दिर के पास बैठकर देश में विद्यमान उपरोक्त बुराईयों को दूर करने का संकल्प लिया ।'

विवेकानन्द का यह संकल्प ऐतिहासिक महत्त्व रखता है, क्योंकि इस संकल्प के बाद वे न केवल राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए गम्भीरता से सोचने लगे, बल्कि इस दिशा में प्रयासरत भी हो गए । उन्होंने अपने अनुयायियों के समक्ष इस सभा में भाग लेने की इच्छा व्यक्त की । धर्म संसद में भाग लेने के लिए प्राथमिक रूप से उनका उद्देश्य थाः भरत की गरीबी के निवारण के लिए समृद्ध अमेरिका का सहयोग प्राप्त करना। इस सम्बन्ध में उन्होंने कहा था -

"मैं सारे भारत में घूम चुका हूँ । पर हे बन्धुओं, वह मेरे लिए एक दारूण कष्टदायक अनुभव था, जब मैंने जनसाधारण की भयंकर निर्धनता और पीड़ा को अपनी आँखों से देखा । मैं अपने आँसू नहीं रोक सका । मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि बिना लोगों की गरीबी और कष्ट दूर किये, उनमें धर्म का प्रचार करना बेमानी है । ...इसी कारण दरिद्र भारत की मुक्ति के साधन जुटाने के लिए मैं अमेरिका जाना चाहता हूं ।"

विवेकानन्द ने अपने भाषण में हिन्दू धर्म को "सभी धर्मों का आधार" बताया, क्योंकि इसी ने संसार को सहिष्णुता और सार्वभौमिकता का पाठ पढ़ाया है । हिन्दू धर्म की मूल शिक्षा है कि एक-दूसरे को समझो और स्वीकार करो ।

विवेकानन्द की हिन्दू धर्म सम्बन्धी बातें अमेरिकावासियों को काफी रोचक लगी। दरअसल अन्य सभी वक्ताओं ने अपने-अपने सम्प्रदाय की बात की थी । सिर्फ विवेकानन्द ही एकमात्र ऐसे वक्ता थे जिन्होंने 'सार्वभौमिक धर्म' की चर्चा की और सब धर्मों/मतों को सार्वभौमिक धर्म के हिन्दू धर्म सम्बन्धी विचार से आबद्ध कर दिया ।

धर्म-संसद में विवेकानन्द ने अमेरिकावासियों को हिन्दुओं के आध्यात्मिक दर्शन के बारे में बताते हुए कहा किः

"हिन्दू लोग किसी को पापी कभी नहीं मानते । हम सब लोग अमृत की संतान है । इस पृथ्वी पर पाप नाम की कोई चीज नहीं है । यदि कोई पाप है तो वह है: मनुष्य को पापी कहना । तुम सर्व शक्तिमान आत्मा हो, शुद्ध, मुक्त व महान ! उठो, जागो और अपने स्व को प्रकट करने के लिए चेष्टा करो !"

7 अगस्त 1895 को विवेकानन्द इंग्लैण्ड पहुँचे जहाँ मिस हेनरी ऐटा मूलर और मि० ई० टी० स्टर्डी ने उनका जोरदार स्वागत किया । लंदन में उन्होंने 'पिकैडली प्रिंसेज हॉल' में एक हजार से अधिक श्रोताओं के सम्मुख 'आत्मज्ञान एवं ज्ञानयोग' के विषय पर एक गंभीर भाषण दिया। उनके भाषण से लंदन की जनता बहुत प्रभावित हुई । वहाँ उनको "तूफानी हिन्दू" (Cyclonic Hindu) का नाम दिया गया । उनके विषय में 'दि स्टैण्डर्ड' नामक पत्रिका ने लिखा, "राजा राममोहन राय के बाद, सिर्फ केशवचन्द्र सेन को छोड़कर, प्रिंसेज हॉल में इस हिन्दू वक्ता की तरह और कोई शक्तिशाली प्रबुद्ध भारतीय अवतरित नहीं हुआ था ।" इसी तरह, 18 जनवरी 1896 को 'इंडियन मिरर' नामक पत्रिका ने विवेकानन्द के संबंध में लिखा थाः-

स्वामी विवेकानन्द ने लंदन के अनेक विशिष्ट पुरुष व महिलाओं की दृष्टि आकर्षित की थी । उनकी हिन्दू दर्शन व योग सम्बन्धी कक्षाओं में अनेक उत्साही श्रोतागण उपस्थित होते थे । किसी संवाददाता ने लिखा कि लंदन के गणमान्य परिवारों की महिलाएं, कुर्सियों के अभाव में, ठीक उनके भारतीय शिष्यों की तरह फर्श पर पैर मोड़कर बैठ कर भक्तिभाव के साथ स्वामीजी के उपदेश सुनती थी । केनन, विलियम विल्बरफोर्स, हैज आदि विशिष्ट इसाई धर्म प्रचारकों ने भी उनको बड़े सम्मान के साथ सुना ।

मार्च 1896 में न्यूयार्क लौटकर स्वामीजी ने वेदान्त योग के प्रचार के लिए एक संस्था स्थापित की जिसका नाम 'फांउडेशन ऑफ वेदान्त सोसाइटी' रखा गया। इसका सभापति श्री फ्रांसिस एच० लिगेट को बनाया गया। इस संस्था में उनकी एक शिष्य भगिनी हरिदासी योग की शिक्षिका बनी तथा स्वामी कृपानन्द, अभयानन्द व योगानन्द वेदांन्त के प्रचारक बनें । विवेकानन्द का विश्वास था कि जब तक प्राच्य आध्यात्म और पाश्चात्य विज्ञान का संगम नहीं होगा, तब तक मानवता का कल्याण असंभव है । वे वेदान्त और विज्ञान के बीच समन्वय चाहते थें । जब तक हिन्दू धर्म की पद्धति वैज्ञानिक रूप से प्रस्तुत नहीं की जाएगी, तब तक वह पाश्चात्य जगत को स्वीकार्य नहीं हो सकती। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु उनकी संस्था ने उनके पाश्चात्य शिष्यों को भारत भेजा और भारतीय शिष्यों को अमेरिका एवं यूरोप बुलाया। उनकी संस्था का पश्चिमी देशों में मुख्य लक्ष्य थाः "प्राच्य और पाश्चात्य सभ्याताओं के मिलन हेतु एक सेतु का निर्माण करना और धर्म तथा विज्ञान के परस्पर समन्वय द्वारा एक नयी सभ्यता का गठन करना ।

'सम्पूर्ण विश्व का एकत्व' नामक विचारधारा को 'भारत की महावाणी' बताते हुए स्वामी जी ने कहा कि हमें इसे फिर से समझकर सारे जगत में इसका प्रचार करना होगा। उन्होंने कहा-

"सभी नर-नारी और बाल-वृद्ध सुनें और समझें कि सबल और दुर्बल, निर्धन और धनी, प्रत्येक प्राणी में उसी एक अनन्त परमात्मा का वास है । अतः हम सब मनुष्यों का आह्वान करें उठो, जागो, मोह निद्रा त्यागो ! कोई भी दुर्बल नहीं है । आत्मा अनन्त, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ है । उठ खड़े हों, अपने को सिद्ध करो, अपने भीतर विद्यमान ईश्वर को प्रमाणित करो !"

उन्होंने आधुनिक भारत के पुर्ननिर्माण हेतु अपनी विचारात्मक अभिव्यक्ति प्रस्तुत करते हुए एक स्थान पर कहा-

"मेरी योजना है कि भारत में ऐसी संस्थाएं स्थापित हों जो हमारे शास्त्रों के सत्य को देश-देशान्तर में प्रसारित करने के लिए हमारे नवयुवकों को प्रशिक्षित करें । मुझे श्रेष्ठ मनुष्य चाहिए, और सब कुछ तो मिल ही जायेगा । बस मुझे चाहिए बलवान, उत्साही, विश्वासी व सच्चे नवयवुक। ऐसे सौ नवयुवक संसार में क्रांति ला देंगें ! संकल्प सबसे बड़ी चीज है, वह सर्वजयी है क्योंकि वह ईश्वर की देन है.... शुद्ध और दृढ़ संकल्प सर्वशक्तिमान है ।"

उन्होंने आधुनिक राष्ट्र-निर्माण सम्बन्धी अपने चिंतन में वर्ण-विभेदों को नकारते हुए लोगों का आह्वान किया कि और कहा कि, -

"यदि आनुवांशिकता के आधार पर एक ब्राह्मण में शूद्र की अपेक्षा विद्या के प्रति अधिक अभिरूचि है तो ऐसे ब्राह्मण की शिक्षा पर धन व्यय मत करो, अपितु सारा धन शूद्र पर व्यय करो । दुर्बल को दान दो क्योंकि उसी को दान की आवश्यकता है ।.... यही मेरी समझ में न्यायपूर्ण और तर्कसंगत है ।

स्वामी विवेकानन्द ने अपने विचारों की ऊर्जा से जनसामान्य में चेतना को जागृत कर दिया जिससे समस्त मानव सभ्यता मानवीयता की डगर पर चलने के लिए ये एकजुट हो गई । दूसरी ओर स्वामी शारदानंद और स्वामी अभेदानंद दोनों ने ही सफलतापूर्वक वेदान्त का प्रचार प्रसार कर स्वामी जी के विचारों को गति प्रदान की और उनके अनुयायियों ने आगे आकर मानवीयता की अलख जगाई। उनके शिष्य भी मानव सेवा कार्य में जुट गये । इस प्रकार स्वामी विवेकानंद एक स्थल से दूसरे स्थल पर भ्रमण करते हुए, चारों ओर अपने शिष्यों और अन्यायियों के साथ राष्ट्रसेवा हेतु आधुनिक भारत के नव निर्माण हेतु संगठन व निर्माण कार्य में जुट गए हैं और निरंतर अपने देश को नवीनता की ओर ले जाने के लिए प्रयासरत हो गए । उनके प्रयास जन जन के हृदय में चेतना नवीनता और मानवीयता को जागृत करने वाले थे ।

संक्षेप में, स्वामी विवेकानन्द ने अपनी अमेरिका एवं यूरोप यात्रा के दौरान जो कुछ भी हासिल किया था, उसका पूरा लाभ वे अपने देशवासियों को देने को तत्पर थे । अतः अपनी उस महान् उपलब्धि को अपने राष्ट्र को समर्पित करते हुए उन्होंने राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लक्ष्य पर अपना ध्यान केन्द्रित कर दिया । वे समझ चुके थे कि भारत के निर्माण का सूत्र है स्वयं पर भरोसा करना, अपनी ताकत समझना एवं निडर बनना । इस संदर्भ में जवाहर लाल नेहरू 'दि डिस्कवरी ऑफ इण्डिया' नामक अपनी विख्यात रचना में "वर्तमान भारत को स्वामीजी की

देन" नामक अध्याय में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखते हैं-

"उनके व्याख्यानों एवं रचनाओं में एक स्वर जो बार-बार उभर कर आता है, वह है 'निर्भयता'। भय और दुर्बलता को त्याग कर वीर बनो! यही है उपनिषदों की महान शिक्षा।... स्वामी जी ने कहा था कि आज हमें ऐसे बलवान मनुष्यों की जरूरत है जिनकी मांसपेशियां लौह के समान दृढ़ और फौलाद के समान सख्त हो, और जिनकी इच्छाशक्ति में ब्रह्माण्ड के गूढ़तम रहस्यों का भेदन करने की क्षमता हो। #57

निष्कर्ष

संक्षेप में, विवेकानन्द ने देशभक्ति का एक महान आदर्श भारतीयों के सम्मुख रखा और उन्हें प्रेरणा दी कि वे राष्ट्रोत्थान तथा मानव उत्थान के महान् कार्य हेतु एकजुट हों। एक आध्यात्मिक नेता होते हुए भी विवेकानन्द का हृदय राष्ट्रीयता से ओतप्रोत था। उन्होंने देश की राजनीति में कभी भी भाग नहीं लिया, परन्तु अपनी लेखनी द्वारा सदैव राष्ट्रीय चेतना का ही पोषण किया। उनके विचारों ने लाखों भारतीयों का मार्गदर्शन किया। उन्होंने राष्ट्र-निर्माण हेतु ज्ञानयोग, कर्मयोग व भक्तियोग का आदर्श प्रतिपादित किया और हिन्दू धर्म के मानवतावादी एवं सार्वभौमिक मूल्यों को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि धर्माचरण दरिद्रता में संभव नहीं है। वस्तुतः दरिद्रता निवारण ही सच्चा मानव धर्म है। वस्तुतः स्वामी विवेकानंद जी ने हर पल हर क्षण अपने प्रयासों के द्वारा भारत को आधुनिक बनाने व उसका नवीन मूल्यों के साथ पुनर्निर्माण करने में एक अभिनव योगदान दिया है। कुल मिलाकर, विवेकानन्द ने अपनी शिक्षाओं व कार्यों से भारतवासियों में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की चेतना को सींचा जिसके चलते वे राष्ट्रीय स्वतंत्रता के महत्त्व को समझने लगे। इस तरह आधुनिक भारत के सांस्कृतिक व ऐतिहासिक पुनर्निर्माण में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

REFERENCES

1. **तेजस्वानन्द, स्वामी, रामकृष्ण मठ आदर्श और इतिहास, रामकृष्ण मठ, धन्तौली, नागपुर, 1974.**

2. **अनिल, राजकुमार, स्वामी विवेकानन्द, किताब घर, दिल्ली, 1975.**

3. **चोपड़ा, पुरी, दास, भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास, (भाग-III) मैकमिलन इण्डिया, नई दिल्ली, 1976.**

4. **चन्द्रा, बिपन, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 1990.**

5. **आहुजा, राम, भारतीय सामाजिक व्यवस्था, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 1995.**

6. **आविनाशेलिंगम, टी० एस०, विवेकानन्द की शिक्षा, रामकृष्ण आश्रम, कलकत्ता, 1996.**

7. **राजेन्द्र प्रसाद गुप्त - स्वामी विवेकानन्द : व्यक्ति और विचार, राधा पब्लिकेशन, भाग 1, नई दिल्ली, 1997.**

8. **वर्मा, रामशरण, प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, नई दिल्ली, 2003.**

9. **नागोरी, जीतेश, मुगलकालीन भारत (1656-1761), राज पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर, 2006.**

10. **जैन, कैलाश चन्द, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, राजकमल, प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011.**

11. **श्रीवास्तव, के० सी०, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, युनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद, 2012.**